श्री खुशाल दास कृषि पत्रिका E-ISSN: Applied

श्री खुशाल दास कृषि पत्रिका

खण्ड 01 भाग 01, (अक्टूबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 05–06

सड़क किनारे शोभाकार पौधारोपण का महत्व

डॉ० अभिनव कुमार[1] एवं मानवी[2]

सहायक प्राध्यापक,[1] छात्र[2]

कृषि विज्ञान संकाय

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

सड़क किनारे शोभाकार पौधारोपण आज के समय की एक अत्यंत आवश्यक पर्यावरणीय पहल है। जैसे–जैसे शहरीकरण बढ़ रहा है और सड़कों का जाल फैलता जा रहा है, वैसे–वैसे हरियाली की मात्रा घटती जा रही है। सड़कें हमारी प्रगति का प्रतीक हैं, लेकिन इनसे उत्पन्न धूल, ध्वनि और वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए हानिकारक है। ऐसे में सड़क किनारे पौधारोपण न केवल सड़कों की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि प्रदूषण को नियंत्रित करने, तापमान को संतुलित रखने और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी बड़ी भूमिका निभाता है।

शोभाकार पौधारोपण की परिभाषा और उद्देश्य

शोभाकार पौधारोपण का मुख्य उद्देश्य है कृ सड़कों, गलियों और राजमार्गों के किनारे ऐसे पौधे लगाना जो आकर्षक दिखें और साथ ही पर्यावरण के लिए लाभदायक हों। इसमें फूलदार पौधे, सदाबहार वृक्ष, झाड़ियाँ, बेलें और छायादार वृक्ष शामिल होते हैं। इन पौधों का चयन स्थानीय जलवायु, मिट्टी की प्रकृति, जल उपलब्धता और स्थान की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। उद्देश्य केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संरक्षण और मानव कल्याण भी है।

सौंदर्य और मनोवैज्ञानिक लाभ

हरियाली और सुंदर फूलों से सजी सड़कें यात्रियों के मन में शांति और प्रसन्नता का भाव उत्पन्न करती हैं। जब कोई व्यक्ति लंबी यात्रा पर जाता है और उसे सड़क किनारे हरे–भरे वृक्ष, झूमते फूल और सुगंधित वातावरण मिलता है, तो थकान कम होती है और मानसिक सुकून महसूस होता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि हरा रंग मन को शांत करता है और तनाव को कम करता है। इस प्रकार, शोभाकार पौधारोपण यात्रा के अनुभव को आनंददायक बनाता है और सड़क दुर्घटनाओं में भी अप्रत्यक्ष रूप से कमी लाने में सहायक होता है क्योंकि मनुष्य शांत और संयमित महसूस करता है।

पर्यावरणीय महत्व

सड़क किनारे पौधे हमारे पर्यावरण के लिए एक प्राकृतिक फिल्टर का काम करते हैं। वाहन प्रदूषण से उत्पन्न धूल, कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसें वृक्षों की पत्तियों और जड़ों द्वारा अवशोषित की जाती हैं। इस प्रक्रिया से वायु शुद्ध होती है और आसपास का वातावरण स्वस्थ रहता है। इसके अलावा, वृक्षों की छाया से सड़क की सतह का तापमान कम होता है, जिससे "अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट" को कम किया जा सकता है।

वृक्षों की पत्तियाँ ध्वनि तरंगों को भी सोखती हैं, जिससे वाहनों से होने वाला शोर प्रदूषण घटता है। इस प्रकार सड़क किनारे हरियाली एक प्राकृतिक ध्वनि रोधक के रूप में कार्य करती है।

जैव विविधता और पारिस्थितिकीय भूमिका

शोभाकार पौधारोपण से केवल पर्यावरण ही नहीं, बल्कि जैव विविधता को भी लाभ होता है। सड़क किनारे वृक्ष और झाड़ियाँ अनेक पक्षियों,

तितलियों, मधुमक्खियों और अन्य कीटों को आश्रय और भोजन प्रदान करते हैं। इससे परागण की प्रक्रिया में वृद्धि होती है और स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र मजबूत बनता है।

यदि देशी प्रजातियों जैसे नीम, बबूल, कचनार, अमलतास, मौलश्री, अर्जुन आदि का चयन किया जाए, तो यह न केवल पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त होंगे बल्कि स्थानीय वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण में भी मदद करेंगे।

सामाजिक और आर्थिक लाभ

सड़क किनारे हरियाली न केवल देखने में सुंदर लगती है, बल्कि यह समाज के लिए आर्थिक रूप से भी लाभकारी होती है। सुंदर वृक्षों और फूलों से सजे मार्ग पर्यटन को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय लोगों को आजीविका के अवसर मिलते हैं। पौधशालाओं (दनतेमतपमे), रखरखाव कर्मियों और बागवानी विशेषज्ञों को रोजगार मिलता है।

इसके अतिरिक्त, अच्छी तरह से नियोजित हरित मार्ग किसी शहर या गाँव की पहचान बन जाते हैं। जैसे लखनऊ के अशोक वृक्षों से सजे मार्ग, दिल्ली के अमलतास मार्ग या चंडीगढ़ के गुलमोहर वृक्ष दृ ये न केवल शहरों की शोभा हैं बल्कि पर्यावरण–संवेदनशील नगर नियोजन के प्रतीक भी हैं।

सड़क सुरक्षा और पौधारोपण का संबंध

शायद यह सुनने में अजीब लगे, लेकिन सड़क किनारे वृक्ष सड़क सुरक्षा में भी सहायक होते हैं। वृक्षों की छाया से तेज धूप में चमक कम होती है, जिससे वाहन चालकों की दृष्टि बेहतर बनी रहती है। हरियाली से वातावरण में शांति रहती है, जिससे चालक अधिक सतर्क और संयमित रहते हैं। हालांकि, पौधों का रोपण सड़क से उचित दूरी पर किया जाना चाहिए ताकि दृश्यता बाधित न हो और दुर्घटनाओं का खतरा न बढ़े।

उपयुक्त पौधों का चयन

सड़क किनारे पौधारोपण के लिए पौधों का चयन अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। ऐसे पौधे चुने जाने चाहिए जो स्थानीय परिस्थितियों में आसानी से पनप सकें, कम पानी में जीवित रह सकें और जिनकी जड़ें सड़क की संरचना को नुकसान न पहुँचाएँ।

उपयुक्त वृक्षों के उदाहरणः नीम, अमलतास, कचनार, अर्जुन, मौलश्री, गुलमोहर, अशोक, पीलक, बोगनवेलिया, चंपा, कनकचंपा, कदंब आदि।

झाड़ियों और पौधों के उदाहरणः डुरांटा, हिबिस्कस, क्रोटन, इक्सोरा, टेकोमा, आलमंडा, कैसिया, पाम आदि।

इन पौधों से न केवल सौंदर्य बढ़ता है, बल्कि ये प्रदूषण–सहिष्णु भी हैं।

रखरखाव और प्रबंधन

केवल पौधे लगाना पर्याप्त नहीं हैय उनका नियमित रखरखाव भी उतना ही आवश्यक है। पौधों को समय–समय पर पानी देना, छँटाई करना, रोग नियंत्रण और सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करना जरूरी है। स्थानीय निकायों, पंचायतों और नागरिकों की भागीदारी से ही यह कार्य सफल हो सकता है। प्रत्येक नागरिक को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि वह अपने क्षेत्र की हरियाली को बनाए रखे और पौधों की देखभाल करे।

निष्कर्ष

सड़क किनारे शोभाकार पौधारोपण केवल सजावट का कार्य नहीं है, बल्कि यह एक पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक निवेश है। यह वायु को शुद्ध करता है, धूल और शोर प्रदूषण को कम करता है, तापमान नियंत्रित करता है, जैव विविधता को बढ़ावा देता है और लोगों के मन में सौंदर्यबोध और पर्यावरणीय चेतना विकसित करता है।

यदि प्रत्येक सड़क के किनारे हरित पट्टी विकसित की जाए, तो यह न केवल हमारे शहरों को सुंदर बनाएगा बल्कि "स्वच्छ, हरित और सतत भारत" के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। हमें यह समझना चाहिए कि सड़कें केवल यात्रा का माध्यम नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ने का अवसर भी हैं। अतः शोभाकार पौधारोपण का विस्तार और संरक्षण हम सभी का कर्तव्य होना चाहिए।